Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 2, April-2023, ISSN 2230-7540

# यकृत विकार का आयुर्वेद प्रबंधन

**आचार्य मनीष जी[1*], डॉ. अभिषेक[2], डॉ. गितिका चौधरी[3], डॉ. जयंत बत्रा[4]**

[1] फाउंडर-डायरेक्टर, जीना सीखो लाइफकेयर लिमिटेड

[2] ग्रोथ ऍडव्हाजर , जीना सीखो लाइफकेयर लिमिटेड

[3] सिनियर कन्सल्टन्ट, जीना सीखो लाइफकेयर लिमिटेड

[4] क्लिनिकल रिसर्च ऑफिसर, शुद्धि ग्राम हॉस्पिटल, जीना सीखो लाइफकेयर लिमिटेड

***सार - आयुर्वेदिक प्रबंधन में यकृत के विकारों का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है। यकृत विकारों के लिए आयुर्वेद चिकित्सा एक संपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करती है, जिसमें आहार, औषधि, प्राकृतिक उपचार और योग का संयोजन शामिल होता है। इसमें यकृत की सार्विक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए प्राकृतिक उपायों का उपयोग किया जाता है, और रोग के लक्षणों को सुधारने के लिए विशेष आहार और औषधियों का सुझाव दिया जाता है। यकृत रोगों के आयुर्वेदिक प्रबंधन का उद्देश्य यकृत विकारोकी चिकित्सा करने पूर्व वैद्य को यह आयुर्वेदीक शास्त्र और आधुनिक शास्त्रद्वारा यकृतकी संरचना, क्रिया और वैषम्यात्मक बदलाव को समझ लेना यही है और इससे यकृत की स्वास्थ्य एवं कार्यक्षमता को बनाए रखना और रोगों के उपचार के माध्यम से स्वास्थ्य को सुधारना यह है***

***कीवर्ड - यकृत, आयुर्वेद प्रबंधन, विकार***

----------X----------

**परिचय**

लीवर रोगों के आयुर्वेदिक प्रबंधन में एक व्यापक दृष्टिकोण शामिल होगा जिसका उद्देश्य यकृत के स्वास्थ्य को बहाल करना और शरीर के दोषों को संतुलित करना है। कार्यप्रणाली में आहार समायोजन, आयुर्वेद उपचार, विषहरण उपचार, जीवनशैली में बदलाव और रोगी विशिष्ट रणनीतियों का संयोजन शामिल होगा।

आयुर्वेदिक यकृत रोग प्रबंधन के लिए आहार में संशोधन महत्त्वपूर्ण है। चिकित्सक यकृत की विशिष्ट संरचना और विशिष्ट यकृत रोग स्थिति के आधार पर एक आहार योजना तैयार करता है। आमतौर पर, आहार से कड़वी और कसैली होते हैं. सब्जियां, साबुत अनाज और ताजे फल जैसे खादय पदार्थ शामिल होंगे, जबकि मसालेदार, कम शामिल होते है। तैलीय और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के सेवन को कम किया जाता है। यह ऐसा अध्ययन है जिनमें यकृत रोग सहित यकृत रोग के चरणों पर चर्चा की गई।

**खोज शब्द लीवर यकृत आयर्वेद**

**आयुर्वेद समझ -**

आयुर्वेद मैं यकृत को वैदिक काल से ही एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।

आयुर्वेद दर्शन त्रिदोष (वात, पित्त और कफ) धातु (रस, रक्त, मांस, मेद अस्थी मज्जा, शुक्र) और त्रिमल (मूत्र,

www.ignited.in

पुरीष और स्वेद) इनको शरीर का मूल घटक मानता है और उनकी संतुलित और असंतुलित स्थिति है।

क्रमश स्वास्थ्य (स्वस्थ) और रोग (विकृत) के रूप में जाना जाता है। तीन द्रव्य कार्यात्मक इकाई है और सप्त धातु शरीर की संरचनात्मक इकाई है। आहार और धातु का अवशिष्ट उत्पाद मल है जिसे संतुलन के लिए उचित उत्सर्जन की आवश्यकता होती है।

आयुर्वेदिक ग्रंथाके के अनुसार यकृत को शक्ति कहा जा सकता है। प्राकृत रंजक पित्त का स्थान है जो रस धातु को रक्त धातु में बदल देता है। यह रक्तवाही का मूलस्थान (उत्पत्ति स्थल) है, रक्तवाही और मांसवाही धमनि से भी संबंधित है। यकृत एक महत्वपूर्ण कोष्टांग (पेट का अंग) है। आयुर्वेद में शारीरिक तत्वों (धातु) के रोग या तो वृद्धि (विशिष्ट मात्रा में वृदधि) या क्षय (विशिष्ट मात्रा में कमी) के माध्यम से प्रकट होते हैं जैसे रस वृद्धि, रस क्षय, रक्त वृद्धि, रक्त क्षय, मांस वृदधि, मांस क्षय आदि। इसी प्रकार यकृत वृदधि (हेपेटोमेगाली) और यकृत क्षय (सिरोसिस) के माध्यम से यकृत प्रकट होता है। सुश्रुत पहली बार यकृत वृद्धि को विशिष्ट नाम यक्रिदालुदारा देते हैं जबकि यकृत क्षय का वर्णन भैषज्य रत्नावली में किया गया है।

यकृत विकार का इलाज उदर रोग संबंधसे किया जा सकता है। यकृत का उल्लेख चरक संहिता में प्लिहोदर के उपचार में किया गया है। यकृत रोग का विस्तृत वर्णन भावप्रकाश में यकृतवृद्धि के रूप में इसके वर्गीकरण एवं लक्षण विज्ञान सहित मिलता है।।

**यकृत वृद्धी के लक्षण और संकेत -**

यकृत के बढ़ने को यकृत-वृद्धि कहा जाता है जिसमें कफ और पित्त दोष के लक्षण होते हैं। इनके अलावा, रोगियों को मंद-ज्वर (हल्का बुखार), मंद अग्नि (पाचन प्रक्रिया का कम होना), क्षीण-बल (कमजोरी) और अति-पांडु (अत्यधिक एनीमिया) (भावप्रकाश, मध्य- खंड) चिकित्सा प्रकार हो सकता है। 33:2, 3) भावप्रकाश ने चार प्रकार की प्लिह-वृद्धि का वर्णन किया है और इससे चार प्रकार की प्लिह वृधि अर्थात् रक्तज यकृत-वृद्धि, पित्तज यकृत-वृद्धि, कफज यकृत-वृदधि और वातज यकृत-वृद्धि के लक्षण और संकेत इस प्रकार निकाले जा सकते हैं।

**यकृत वृद्धि (हेपेटोमेगाली) के लक्षण और संकेतः-**

**1. रक्तज यकृत-वृद्धिः** रक्तज प्रकार के रक्तज वृद्धि के लक्षणों में क्लम (थकान), भ्रम (चक्कर), विदाह (जलन), वैवर्ण्य (रंग खराब होना), गात्र -गौरव, (शरीर में भारीपन) शामिल हो सकते हैं। मोह (बेहोशी) और रक्तोदर (पेट में खून बहना)!

**2. पित्तज यकृत-वृद्धिः** ज्वर (बुखार), पिपासा (प्यास), दाह (जलन), मोह (बेहोशी), पीत गात्रत्व (शरीर का पीला रंग) जैसे लक्षणों और संकेतों को पित्तज यकृत के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है

**यकृत रोग की संप्राप्ति (आयुर्वेदिक पैथोफिजियोलॉजी)-**

यकृत वृद्धि दोष के खराब होने, अग्नि में कमी, आम का उत्पादन, स्रोत में रुकावट और स्वभाव सात्म्य विपर्यय द्वारा दोष, धातु के गुणों में बदलाव की एक रोग प्रक्रिया है। इसके अग्नि गुण के कारण मद्य का अत्यधिक सेवन पित्त को बढ़ाता है और अप धातु को कम करता है और वात को ख़राब करके यकृत द्रव्यमान (यकृत क्षय) के आकार को कम करता है। जब पेट में पाचक पित्त का उष्ण गुण दुषित हो जाता है तो यह यकृत के रंजक पित्त के प्रभाव को बिगाड़ देता है, यह अत्यधिक पित्तवृद्धिकर आहार या शराब के कारण हो सकता है! जब लिवर में पित्त का स्तर अधिक होता है, तो यह कफ (जल सामग्री) को बाष्पित कर देता है और यकृत की संरचना को नुकसान पहुंचाता है, जिससे यकृत में वस्तुमान गिरावट और सूखापन होता है। कभी-कभी यह आम स्वभाव सात्म्य विपर्यय के कारण दोष के गुणों में बदलाव से बाधित होता है। यकृत में शुष्क वातावरण वात को और अधिक ख़राब करने में सहायक होता है। विकृत वात यकृत में अधिक नुकसान पहुंचाता है, सांरचना को बदल सकता है जिससे यकृत क्षय (यकृत सिरहोसिस) हो सकता है। आम तौर पर कफज प्रकृति (एक प्रकार का आनुवंशिक और एपिजेनेटिक कारक) वाले व्यक्ति वसायुक्त आहार के अधिक सेवन और उत्तरोत्तर विकसित मोटापा (मोटापा) की और बढ जा होते हैं। स्थौला (मोटापा) के साथ स्नेह आहार (वसायुक्त आहार की आदत) और कम शारीरिक व्यायाम से विकृत मेद धातू (रक्त लिपिड) में वृद्धि होती है और पहले तुरंत कायाग्नि और फिर मेदाग्नि वैषम्य (वसा चयापचय में परिवर्तन) को खराब करता है। कायाग्नि की शिथिलता से अधिक

आम उत्पन्न होता है और मेदाग्नि की शक्ति कम हो जाती है। यह धात्वाग्नि को प्रभावित करता है और तीनों दोष कुपित होकर यकृत में स्थित हो जाते हैं। अतः यकृत विकार त्रिदोषज हैं। स्निग्ध गुण की वृद्धि और उष्ण गुण की कमी से यकृत के अंदर अधिक विकृत क़फ़ उत्पन्न होता है। कफ और दुर्मेद के जमाव से पहली बार में यकृत वृद्धि होती है, जहां विकृत कफ के सभी लक्षण दिखाई देते हैं और हमारे आचार्य ने इसे कफज उदर के रूप में वर्णित किया है. जिससे दुर्मेद के संचय से विकृत क्लेद का उत्पादन होता है। यह क्लेद धातु में शोफ पैदा करता है (सेपेटिक स्टेलेट कोशिकाओं में पैरेन्काइमल परिवर्तन) धातू पाक के बाद होता है। यह स्थिति सीधे तौर पर स्रोत मूल को अवरुद्ध करता है, परिणामस्वरूप स्तोतसोमें रुकावट आती है, जिससे पित जमा हो जाता है और पीलिया हो जाता है.

**साहित्य समीक्षा**

**रिसर्च पेपर का अध्ययन -**

1) बी. आर. तुबाकी मैसी, गावसऔरहिमानीनेगी (2022) जलोदर के साथ लिवर सिरोसिस एक चुनौतीपूर्ण चिकित्सा स्थिति है। आयुर्वेद नैदानिक अनुभव एक अनुकूल भूमिका का सुझाव देते हैं लेकिन साक्ष्य का अभाव है। एक पूर्वव्यापी समूह अध्ययन में केएलई आयुर्वेद अस्पताल बेलगावी के चिकित्सा अनुसंधान सुविधा के कायाचिकित्सा विभाग के रोगी प्रभाग में इलाज किए गए मेडिकल अल्ट्रासोनोग्राफी के माध्यम से निदान किए गए लिवर सिरोसिस और जलोदर वाले रोगियों के अस्पताल के रिकॉर्ड की जांच की गई।

2) रीता कुमार (2021) लीवर हमारे पूरे शरीर की गतिविधियों को नियंत्रित करता है। लिवर सिरोसिस आज सबसे आम चिकित्सा समस्या है। इसका एक और मुख्य कारण दीर्घकालिक शराब का सेवन है। शराब का अत्यधिक और लंबे समय तक सेवन शरीर के हर अंग को प्रभावित करता है। यद्यपि भारी सेवन के कारण लीवर, हृदय और किडनी सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, शराब से प्रेरित लीवर सिरोसिस अधिकतम मामलों में जीवन के लिए खतरा पैदा करने वाली स्थिति है।

3) वसंत पाटील, माधुरी रोड, लीवर सिरहोसिस दुनिया भर के मौत के प्रमुख कारणोमे से एक है, खासकर अगर यह पोर्टल उच्च रक्तचाप से जटिल हो। इस पेपर में पोर्टल उच्च रक्तचाप के साथ लिवर सिरोसिस के एक मामले पर चर्चा की गई है। 61 वर्ष का एक मामला पेट में फैलाव, दद्विपक्षीय निचले अंग की सूजन, सांस लेने में कठिनाई, भूख न लगना और यूएसजी प्रभाव के साथ सामान्यीकृत कमजोरी, फैलाना यकृत पैरेन्काइमल रोग के परिवर्तन, पोर्टल उच्च रक्तचाप के साथ सिरोसिस की शिकायतों के साथ आया।

4) दर्शना डेकाआई (2017) सिरोसिस लीवर पर गंभीर घाव और क्रोनिक लीवर रोग के अंतिम चरण में खराब लीवर कार्यप्रणाली को दर्शाता है। घाव अक्सर शराब या वायरल संक्रमण जैसे विषाक्त पदार्थों के लंबे समय तक संपर्क में रहने के कारण होता है। यह धीरे-धीरे बढ़ता है और अक्सर प्रारंभिक अवस्था में लक्षण पैदा नहीं करता है। हालांकि, जैसे-जैसे लीवर की कार्य प्रणाली धीरे धीरे खराब होती जाती है, और गंभीर समस्या विकसित हो सकती है

**आधुनिक शास्त्र दृष्टीसे यकृत विकार-**

हेपेटोलॉजी एक तेजी से विकसित होने वाला क्षेत्र है जो अगले कुछ दशकों में चिकित्सकों के बीच बढ़ता रहेगा और उत्साह बनाए रखेगा। लिवर को शरीर के सबसे व्यस्त अंगों में से एक कहा जाता है, इसके अधिकांश कार्य हेपेटोसाइट्स द्वारा किए जाते हैं। लीवर कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, थायरोक्सिन (सक्रिय ट्राइआयोडोथायरोनिन में), बिलीरुबिन, इंसुलिन, दवाएं, हार्मोन (जैसे, प्रेडनिसोन से प्रेडनिसोलोन), एल्डोस्टेरोन और विटामिन का चयापचय करता है। यह प्लाज्मा प्रोटीन (जैसे, एल्ब्यूमिन), थक्के बनाने वाले कारक (जैसे, फाइब्रिनोजेन), कोलेस्ट्रॉल, ग्लूकोज, पित्त, अमीनो एसिड और यूरिया का संश्लेषण भी करता है। यह वसा में घुलनशील विटामिन ए, डी, ई और के) और ग्लाइकोजन को संग्रहीत करता है और रक्तशर्करा को नियंत्रित करता है। प्रतिरक्षा में यकृत का सबसे महत्वपूर्ण कार्य (यकृत में शरीर के आधे से अधिक मैक्रोफेज होते हैं)। कई बार लिवर की बीमारियो और लिवर की विफलता के बीच अंतर है । लिंवर रोग किसी भी स्थिति को संदर्भित करता है जो आपके लिवर में सूजन या क्षति का कारण बनता है। लिवर की बीमारी आपके लिवर के समय कार्य को प्रभावित कर सकती है। लीवर की विफलता तब होती है जब आपका लीवर अपनी कुछ या सभी कार्यक्षमता खो देता है। यह लीवर की बीमारी के कारण होने वाली क्षति के कारण हो सकता है, जो ज्यादातर लीवर सिरोसिस में देखी जाती है। कारणों और कारक एजेंटों के आधार पर यकृत विकार सौ से अधिक प्रकार के होते हैं। लिवर के द्रव्यमान में वृद्धि लिवर के बहुत ही सामान्य विकार यानी हेपेटाइटिस

www.ignited.in

(लिवर की सूजन) में पाई जाती है, जो संक्रामक एजेंटों (वायरस, बैक्टीरिया, परजीवी) के कारण हो सकता है, जिसे संक्रामक हेपेटाइटिस के रूप में जाना जाता है। यह हेपेटाइटिस विष (शराब) दवा, वसा, ऑटो इम्युनिटी और वंशानुगत के कारण भी हो सकता है। एल्कोहलिक लिवर रोग शराब के अत्यधिक सेवन की यकृत संबंधी अभिव्यक्ति है, जो एल्कोहलिक हेपेटाइटिस और एल्कोहलिक सिरोसिस का कारण बनता है। आयुर्वेद दवाओं सहित कुछ एंटीबायोटिक और अन्य हेपेटो-टॉक्सिक दवाएं ड्रग इंड्यूस्ड लिवर इंजरी (डीआईएलआई) या ड्रग इंड्यूस्ड हेपेटाइटिस का कारण बनती हैं। अधिक वजन और मधुमेह या मेटाबोलिक सिंड्रोम के कारण फैटी लीवर रोग (हेपेटिक स्टीटोसिस) एक प्रतिवर्ती स्थिति है जहां ट्राइग्लिसराइड की बड़ी रिक्तिकाएं लीवर कोशिकाओं में जमा हो जाती हैं। गैर-अल्कोहल फैटी लीवर रोग मोटापे और मेटाबोलिक सिंड्रोम से जुड़ी बीमारियों का एक स्पेक्ट्रम है। वंशानुगत लिवर रोग जो लिवर को नुकसान पहुंचाते हैं उनमें हेमोक्रोमैटोसिस, जिसमें शरीर में आयरन का संचय शामिल हैं, और विल्सन रोग शामिल हैं।

**तालिका 1. वृद्धि (यकृत वृद्धि) और यकृत द्रव्यमान (यकृत क्षय) में कमी के विभिन्न यकृत विकार ।**

| रोग का नाम | लीवर का द्रव्यमान बढ़ाएँ | लीवर का द्रव्यमान कम करें | प्रेरक एजेंट/कारक |
|---|---|---|---|
| संक्रामक हेपेटाइटिस | + | | वायरल, जीवाणु, परजीवी, |
| अल्कोहलिक हेपेटाइटिस | + | | शराब |
| नशीली दवाओं से प्रेरित हेपेटाइटिस | + | | एटीटी, एंटीबायोटिक्स, जड़ीबूटियाँ- |
| ऑटो इम्यून हेपेटाइटिस | + | | पुरानी सूजन |
| वसायुक्त यकृत | + | | मोटापा, मधुमेह रोगी |
| प्राथमिक एचसीसी | ++ | | |
| माध्यमिक एचसीसी | ++ | | |
| मेटाबोलिक यकृत रोग | | | अधिक भार वाला लोहा, तांबा, |
| पॉली सिस्टिक लिवर | | | |
| यकृत का सिस्टिक फाइब्रोसिस | + | | |
| अल्कोहलिक सिरोसिस | - | + | शराब |

| | | | |
|---|---|---|---|
| गैर अल्कोहलिक सिरोसिस | - | + | |

जब लीवर वायरस या विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आता है, तो सूजन (हेपेटाइटिस) या वसायुक्त (स्टीटोसिस) परिवर्तन या दोनों (स्टीटोहेपेटाइटिस) हो सकते हैं। यकृत रोग के इस चरण में, यकृत अभी भी पुनजीवित हो सकता है और ये परिवर्तन आमतौर पर प्रतिवर्ती होते है। यदि लीवर की चोट के कारण को दूर नहीं किया जाता है, तो क्षति फाइब्रोसिस और अंततः लीवर सिरोसिस में बदल सकती है।

लिवर फाइब्रोसिस का तात्पर्य लिवर में कठोर, रेशेदार निशान ऊतक के संचय से है। हेपेटोसाइट्स का परिगलन प्रतिरक्षा कोशिकाओं को साइटोकिन्स, विकास कारकों और विभिन्न अज्ञात रसायनों को छोड़ने के लिए उत्तेजित करता है। ये रासायनिक संदेशवाहक अन्य पदार्थों के बीच कोलेजन, ग्लाइकोप्रोटीन (जैसे फाइब्रोनेक्टिन) और प्रोटीयोग्लाइकेन्स को सक्रिय और उत्पादित करने के लिए हेपेटिक स्टेलेट कोशिकाओं (यकृत में सहायक कोशिकाओं) को निर्देशित करते हैं। ये पदार्थ यकृत में जमा हो जाते हैं, जिससे गैर-कार्यात्मक संयोजी ऊतक का निर्माण होता है, जिसे "बायकोशिकीय मैट्रिक्स" कहा जाता है। साथ ही, कोलेजन के टूटने या खराब होने की प्रक्रिया खराब हो जाती है। एक स्वस्थ यकृत में, मैट्रिक्स ऊतक का संश्लेषण (फाइब्रोजेनेसिस) और टूटना (फाइब्रोलिसिस) संतुलन में होता है। फाइब्रोसिस तब होता है जब अत्यधिक निशान ऊतक तेजी से बनता है, जिसे तोड़कर लीवर से हटाया जा सकता है। सिरोसिस लिवर फाइब्रोसिस इतना व्यापक हो सकता है कि लिवर की संरचना बदल जाती है इसे सिरोसिस कहा जाता है।

**तालिका 2:लिवर रोगों के विभिन्न चरण**

| कारण | प्रभाव | लक्षण |
|---|---|---|
| सूजन | जिगर का बढ़ना या सूजन होना | कोई लक्षण नहीं |
| फाइब्रोसिस | जिगर का घाव | कोई लक्षण नहीं, प्रतिवर्ती |
| सिरोसिस | गंभीर घाव | लक्षण दिखाई दिया, लीवर खराब हो गया |
| अंतिम चरण लिवर | कार्य बिगड़ गया | जलोदर, हेपेटिक एन्सेफैलोपैथी |
| यकृत कैंसर | अस्वस्थ कोशिकाओं का गुणन | यकृत का काम करना बंद कर देना |

**निष्कर्ष**

संक्षेप में, यकृत विकारों के आयुर्वेद प्रबंधन में नियमित और सावधान रूप से आहार, योग, औषधि, और प्राकृतिक उपायों का अधिकारी बनाना महत्वपूर्ण है। यह तकनीकें यकृत की स्वास्थ्य और कार्यक्षमता को बढ़ावा देने में मदद करती हैं और रोगों के लक्षणों को सुधारने में सहायक होती है। यकृत रोगों के इस आयुर्वेद प्रबंधन का उद्देश्य रोग की पूरी तरह से निवारण के साथ-साथ स्वास्थ्य को सुधारना भी होता है, ताकि व्यक्ति जीवन को स्वस्थ और सुखमय बना सके।

**संदर्भ**

1. डॉ. अशोक कुमार पांडा, डॉ. के के रथ क्रौनिक लिवर रोगों के लिए आयुर्वेदिकउपचार परिणाम जे आयुर्वेद इंटीय मेड साइंस 2019, 6:1-4.

2. पर्ज़ जेएफ, आर्मस्ट्रांग जीएल, फारिंगटन एलए, हटिन वाईजे, बेल बीपी। दुनिया भर में सिरोसिस और प्राथमिक यकृत कैंसर में हेपेटाइटिस बी वायरस और हेपेटाइटिस सी वायरस संक्रमण का योगदान। जे हेपाटोल, 2006; 45:529-538.

3. बिर्चर जे बेन्हामों जेपी, मैकइंटायर एन, रिज़ेटो एम, रोड्स जे, संपादक। क्लिनिकल हेपेटोलॉजी की ऑक्सफोर्ड पाठ्यपुस्तक। दूसरा संस्करण ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 1999.

4. फ्रांज सीसी, हिल्डब्रांड सी, बोर्न सी, एगर एस, रत्ज़ ब्रावो एई, क्राहेनबुहल एस (2013) लिवर सिरोसिस वाले रोगियों में खुराक समायोजन: प्रतिकूल दवा प्रतिक्रियाओं और अस्पताल में भर्ती होने पर प्रभाव। यूर जे क्लिन फार्माकोल 69: 1565-15731

5. चक्रदत्त वैद्य प्रभा की टिप्पणी डॉ. आई.डी. त्रिपाठी और आचार्य आर. एन. द्वारा संपादित। द्विवेदी, अध्याय 8 चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी द्वारा प्रकाशित चतुर्थ संस्करण 2002 पृष्ठ संख्या। 79-81

6. तुबाकी बीआर, गवास एससी, नेगी एच. जलोदर के साथ लिवर सिरोसिस पर आयुर्वेद प्रबंधन का प्रभाव-एक पूर्वव्यापी समूह अध्ययन। जे आयुर्वेद इंटीग्र मेड. 2022 अप्रैल-जून, 13 (2):1005081 doi: 10.1016/j.jaim.2021.07.0231 ईपीयूवी 2022 जनवरी पीएमआईडी: 34996679; पीएमसीआईडी: पीएमसी8814404

www.ignited.in

7. रीता कुमार (2021) "क्रोनिक लिवर डिजीज (सीएलडी) का आयुर्वेदिक प्रबंधन - एक विश्लेषणात्मक समीक्षा" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आयुर्वेद एंड फार्मा रिसर्च आईएसएसएन: 2322 0902 (पी) आईएसएसएन: 2322 - 0910 (ओ) आईजेएपीआर | मई 2021 | खंड 9 | अंक 5

8. वसंत पाटिल, माधुरी रोड (2021) "पोर्टल उच्च रक्तचाप के साथ लीवर सिरोसिस का आयुर्वेदिक प्रबंधन" वसंत पाटिल, माधुरी रोड। पोर्टल उच्च रक्तचाप के साथ लिवर सिरोसिस का आयुर्वेदिक प्रबंधन। पत्रिका आयुर्वेद और समग्र चिकित्सा, खंड-IX, अंक-III (मई-जून 2021)

9. दर्शन डेकाआई (2017) "लिवर सिरोसिस: आयुर्वेदिक साहित्य से समीक्षा" समीक्षा लेख आईएसएसएन: 2454-5023 जे. आयु । जड़ी बूटी। मेड. 2017; 3 (2): 98-101 अप्रैल-जून © 2017, सर्वाधिकार सुरक्षित www.ayurgedjournal.com प्राप्त: 08-03-2017 स्वीकृत: 11-04-2017।

10. अश्वथी जी, धर्मराजन पी शर्मा एआर, शशिकुमार वीके, वासुदेवन नामपूथिरी एमआर। सिरोसिस जलोदर का आयुर्वेदिक प्रबंधन। एएनसी विज्ञान जीवन, 2016 अप्रैल-जून; 35 (4):236-9. डीओआई: 10.4103/0257-7941.1881831 पीएमआईडी: 27621523; पीएमसीआईडी: पीएमसी49958601

---

**Corresponding Author**

**आचार्य मनीष जी***

फाउंडरडायरेक्टर-, जीना सीखो लाइफकेयर लिमिटेड